International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 78-82

जल प्रबन्धन में जल संवर्धन कार्यक्रम का प्रभाव एवं विकास (मेंहदवानी विकासखण्ड, डिण्डौरी जिले के सन्दर्भ में)

प्रसन्न वदन मरकाम [1], डॉ. भूवनेश्वर टेम्भरे [2]
[1] शोधाथी, भूगोल विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] प्राध्यापक, रानी दुर्गावती शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय मण्डला, सीहोर, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
आज हम बिना सोचे–समझे प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करते जा रहे हैं। हम यह नहीं सोच रहे हैं कि उनका भण्डार सीमित है। अगर हम जल को देखें तो उसका उपयोग लगातार बढ़ता ही जा रहा है। विश्व की लगभग सॉंत अरब जनसंख्या उपयोग करने योग्य कुल जल में से वर्तमान में 54 प्रतिशत का उपयोग कर रही है। प्रति व्यक्ति जल की खपत अगर भविष्य में भी ऐसी ही बनी रही तो आगामी 20 वर्षों में सम्पूर्ण विश्व के सम्मुख भयानक जल संकट उत्पन्न होने ही सम्भावना से इंकार नही किया जा सकता है। ऐसे में स्थिति की गंभीरता को देखते हुए जल की खपत पर नियंत्रण और जल प्रबंधन की उचित नीति का होना अति आवश्यक है। जल ही जीवन है, जल को जीवन की संज्ञा दी गई है क्योंकि जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। पृथ्वी पर रहने वाले सभी जीव–जन्तु एवं वनस्पति का जीवन जल पर ही निर्भर है। जल का कोई विकल्प नहीं है। यह हमें प्रकृति से प्राप्त निःशुल्क उपहार है जिसका कोई मोल नहीं है। जल का उपयोग केवल जीव–जन्तु एवं वनस्पति के लिए ही नहीं बल्कि अन्य क्षेत्रों में जैसे वस्तुओं के उत्पादन हेतु उद्योगों में, विघुत उत्पादन में, भवन निर्माण में, सिंचाई के क्षेत्रों में, मानव द्वारा दैनिक कार्यक्रम में प्रमुखता से जिसका उपयोग विशेष तकनीक के बिना सम्भव ही नहीं है।

मूल शब्द : प्राकृतिक संसाधनों, जल प्रबन्धन, मेंहदवानी विकासखण्ड।

1 प्रस्तावना

जनसंख्या वृद्धि को देखते हुये एवं जिले की भूमि उबड़ खाबड़ एवं पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण यहाँ पर वर्षा का जल नहीं रूक पाता है। यहाँ के नल, नलकूप, कुऐं एव जलाश्यों का जल स्तर नीचे गिर जाता है। ग्रीष्म काल के समय में यहाँ जल की समस्या उत्पन्न हो जाती है। अधिकतर जिला मुख्यालय डिण्डौरी में मार्च माह से ही जल की कमी महसूस करने लगते हैं, जिला डिण्डौरी में मार्च से जून तक जल की कमी होने के कारण पूरे जिले में नगर पंचायत को टेंकरों के माध्यम से जल की पूर्ति करना पड़ता है, जिससे कृषि क्षेत्रों में भी इसका असर पड़ता है। जिला मुख्यालय के आस–पास के गाँवों में, संसाधन में सबसे महत्वपूर्ण संसाधन जल संसाधन है जल संसाधन के बिना उद्यान फसलों के उत्पादन में वृद्धि नहीं की जा सकती अतः भूमिगत जल का उपयोग होने के कारण कुओं, नलकूपों एवं खेत की संख्या में आंशिक वृद्धि हुई है। मेढ़ बंधान में तीव्र गति से वृद्धि होने से जल स्तर नीचे चले जाने से कई कुऐ सूख जाते हैं या उनमें पानी की इतनी मात्रा भी शेष नहीं रहती है जिससक सिंचाई कार्य का कार्य किया जा सकता है। यहाँ के जलश्यों में अधिकतर पक्के नहर नहीं बनाये गये हैं। बरसात में कच्ची नहरें टूट जाते हैं, जिससे पानी खेतों तक ले जाने में असूविधा होने के कारण सिंचाई की समस्या बढ़ जाती है।

पूर्वी मध्यप्रदेश का डिण्डौरी जिला जो संसाधनों की कमी, गरीबी, अशिक्षा एवं पीछडेपन के लिए जाना जाता था। डिण्डौरी जिला अनुसूचित जनजातियों के लिए प्रसिद्ध है, डिण्डौरी जिला उबड़ खाबड़ एवं पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण भूमिगत जल की कमी बनी रहती है। डिण्डौरी जिला में मेंहदवानी विकासखण्ड में अधिकांश भाग पहाड़ी, पथरीली, उबड़ खाबड़ एवंज ल की कमी के कारण बंजर भूमि की अधिकता पाई जाती है। जिसमें सिर्फ खरीफ की मौसम में वर्षा आधारित खेती होती है परन्तु अब कई जगहों में भू–जल संवर्धन एवं जल से सम्बन्धित योजनाये संचालित होने के कारण अब रवी एवं जायद फसलों की खेती देखने को मिलती है।

वर्तमान का जिला डिण्डौरी 25 मई 1998 से पूर्व मण्डला जिले की तहसील बनी रही। जो 25 मई 1998 को जिले के रूप में गठित किया गया। वर्तमान में मध्यप्रदेश के 50 जिलों में जिला डिण्डौरी भी एक है। इस जिले का बहुत बड़ा भाग पहाड़ी व पठारी है। यहाँ पर दूर–दूर तक फैले पर्वत श्रेणियाँ हैं जहाँ पर आवागमन के साधनों का अभाव है।

2 स्थिति एवं विस्तार

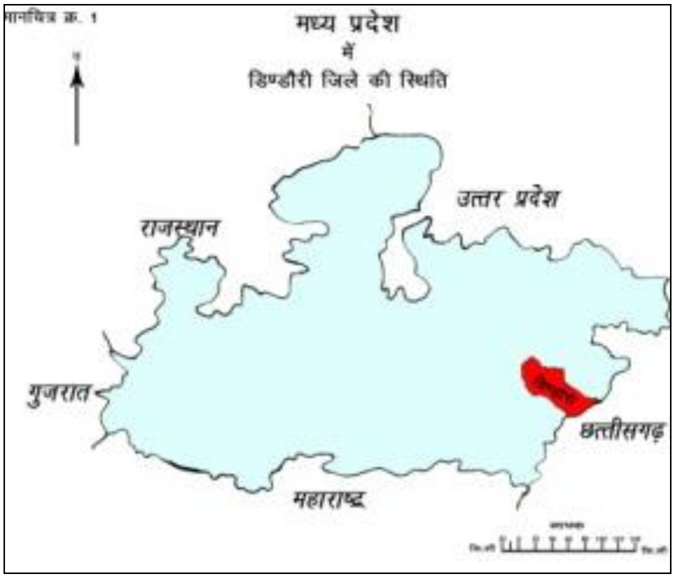

भारत के हृदय स्थल मध्यप्रदेश के दक्षिण पूर्व में स्थित जिला डिण्डौरी का अक्षांशीय विस्तार भूमध्य रेखा से $22^{0}00'$ से $23^{0}22'$ उत्तरी अक्षांश तथा $80^{0}85'$ से $80^{0}58'$ पूर्वी देशांतर में स्थित है। जिला डिण्डौरी के चारों ओर क्रमशः उत्तर में उमरिया, उत्तर पश्चिम में जबलपुर, दक्षिण–पश्चिम में मण्डला तथा पूर्व में बिलासपुर कवर्धा तथा अनूपपुर जिले स्थित हैं। जिला डिण्डौरी का कुल क्षेत्रफल 6128 वर्ग किलोमीटर है। जिसमें मेंहदवानी विकासखण्ड को दर्शाने का प्रयास किया गया है शोधार्थी द्वारा जिसकी अक्षांशीय विस्तार भू–मध्य रेखा से $22^{0}00'$ से $23^{0}22'$ उत्तरी अक्षांश तथा $80^{0}37'$ से $80^{0}45'$ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। इसका क्षेत्रफल लगभग 764 वर्ग कि.मी. है जिसमें लगभग 82651 जनसंख्या निवास करती है। कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजातियों का प्रतिशत 80–85 प्रतिशत है। मेंहदवानी विकासखण्ड में अधिकांश भाग पहाड़ी, उबड़ खाबड पथरीली, मिट्टी से निर्मित है। कही–कही पर हल्की पीली दोमट मिट्टी पायी जाती है। मेंहदवानी की पूर्वी सीमा नर्मदा व जोहिला नही के मध्य भाग से प्रारम्भ होती है, इसके उत्तर–पूर्व में मलधा, रानी दादर व राक्षों पहाड़ स्थित है पूर्व में देवडोंगर नामक पहाड़ी श्रख्ला है। दक्षिण–पूर्व में राई की पहाड़ीयाँ स्थित हैं मेंहदवानी की धरातल की ढ़लान दक्षिण की ओर है। यहाँ से निकलने वाली नदियों का प्रवाह दक्षिण की ओर है।

उद्देश्य
- जल प्रबन्धन में सरकारी योजनाओं का अध्ययन करना।
- भू–जल संवर्धन में कार्यक्रमों की भूमिकाओं का अध्ययन करना।

शोधप्रविधि
अध्ययन का समग्र :– मेंहदवानी विकासखण्ड के जल संसाधनों का अध्ययन करना अध्ययन की इकाईः–

निदर्शन
अध्ययन का शोध प्रपत्र के लिए जनजातीय बहुल डिण्डौरी जिला के मेंहदवानी विकास खण्ड का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि द्वारा किया गया है। चयनित मेंहदवानी विकासखण्ड में कुल गाँच हैं उनमें से अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये 10 गाँवों का चयन इस प्रकार किया गया है, जिनमें जल से सम्बन्धित योजनाएँ संचालित हैं एवं नहीं हैं। जिनमें से 5–5 गाँव बाँट दिया गया है। इस तरह से अध्ययन के लिये कुल 10 गाँवों का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि द्वारा किया गया है। चयनित गाँवों में जानकारी प्राप्त करने के लिये दैव निदर्शन विधि द्वारा चयन किया गया है।

आँकड़ों के स्त्रोत
अध्ययन हेतु संकलन के लिए विषय की आवश्यकता के अनुकूल विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग किया गया है।
1. प्राथमिक स्रोत के अन्तर्गत अध्ययन से सम्बन्धित घटनाओं को देखकर व्यक्तिगत सम्पर्क द्वारा साक्षातकार, अवलोकन, प्रश्नावली एवं अनुसूची समूह चर्चा जैसे अनुसंधान उपकरणों का प्रयोग किया गया है।
2. द्वितीयक स्त्रोतः– द्वितीय समंकों के संकलन के लिये लिखित प्रलेखों, पत्रिकाओं, जिला गजेटियर, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, जिला सांख्यकीय विभाग, जलसंसाधन विभाग व शासकीय कार्यालयों एवं इंटरनेट आदि का सहारा लिया गया है।

उपकल्पना
1. मेंहदवानी विकासखण्ड के जल संसाधनों का पता लगाना।
2. मेंहदवानी विकासखण्ड के जल संसाधनों से सम्बन्धित योजनाऐं संचालित हो रहे हैं।
3. मेंहदवानी विकासखण्ड में जल प्रबन्ध एवं सम्वर्धन का कार्य चल रहे हैं।

मेंहदवानी विकासखण्ड में जल से सम्बन्धित योजनायें संचालित होने के कारण जल की कमी को हद तक कम करने में सफलता प्राप्त करते जा रही है। जलसंसाधन संरक्षण के लिए जल ग्रहण प्रबन्धन मिशन के अन्तर्गत मिलीवाटर शेड पर माइक्रोवाटर शेड का कार्य संचालित है जलग्रहण विकास के लिये ग्राम स्तर पर स्वयं सहायता समूह एवं उपयोगकर्ता समूह के माध्यम से जलग्रहण विकास समिति के दिशा निर्देशन में जलग्रहण के विभिन्न समिति के दिशा निर्देशन में जलग्रहण के विभिन्न कार्यक्रमों को कृषि विकास से जोड़ने तथा कृषि के माध्यम से जलग्रहण क्षेत्रों में आय सृजन हेतु कई कदम उठाये गये हैं, जिनमें जनजातीय परिवारों का पलायन रोका जा सके एवं उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो।

जल संसाधनों का विकास
महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MPNREGA) के अन्तर्गत जल संसाधन मंत्रालय एवं ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा सयुक्त कन्वर्जेन्स प्लान के तहत जल भरण संरचनाओं के सुधार, पुनरूद्धार एवं पुनर्निर्माण के कार्य प्राथमिकता के आधार पर लिये जाने पर बल दिया है। जिसके तहत जल संसाधन सम्भाग डिण्डौरी द्वारा वर्ष 2009 से 2012 का मास्टर प्लान बनाकर जिला पंचायतों एवं विकासखण्डों के ग्राम पंचायतों में भेजा गया है। वर्तमान में पूर्ण एवं कुछ संचालित हैं।

सारणीं 1

	जलाश्य	तालाब	कुए	नल
जिला डिण्डारी	64	926	5656	6209
विकासखण्ड मेंहदवानी	07	79	610	439

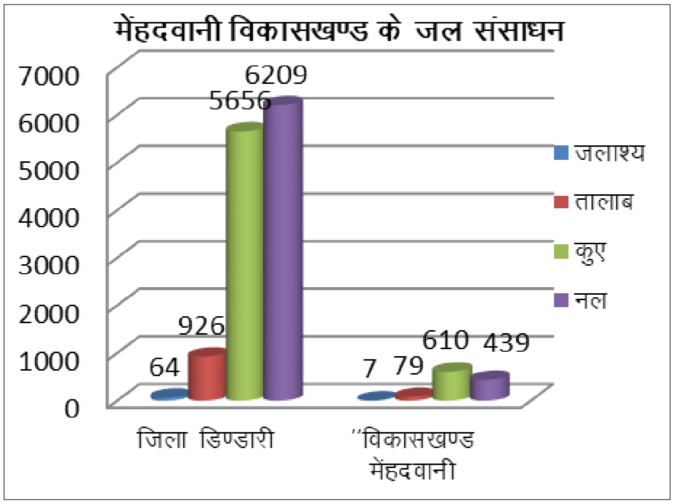

आरेख 1

उपर्युक्त सारणी के अनुसार जिला डिण्डौरी में 2012 के स्थिति में जलायश्यों की संख्या जहाँ पर 64 है वहीं केवल एक विकासखण्ड मेंहदवानी में 07 जलाशयों का निर्माण किया गया है। तालाबों की संख्या जिला में 926 है परन्तु मेंहदवानी में 79 हैं, कुओं की संख्या जिला में 5656 हैं जहाँ मेंहदवानी विकासखण्ड में 610 हैं इसके बाद नलों की संख्या डिण्डौरी जिला में 6209 हैं जिसमें मेंहदवानी विकासखण्ड में 439 हैं।

यहाँ उपकल्पना 1 में सिद्ध होता है कि मेंहदवानी में कुल 1135 जल संसाधन देखने को मिलता है जो अभी भी काफी कम है। इस क्षेत्र में सरकारी योजनाओं को और अधिक संचालित होना चाहिए जिससे यहाँ के बढ़ती जनसंख्या को जल की कमी न हो सके।

मेंहदवानी विकासखण्ड का जल सम्वर्धन

सारणी 2

मिलीवाटर शेड का नाम	माईक्रो वाटर शेड	कुल क्षेत्र	उपचारित क्षेत्र
चचाड बहादुर नाला	08	6067	2730
उमरिया कठौतिया नाला	07	3987	1794
दनदना नाला	06	3870	1741
योग	21	13924	6265

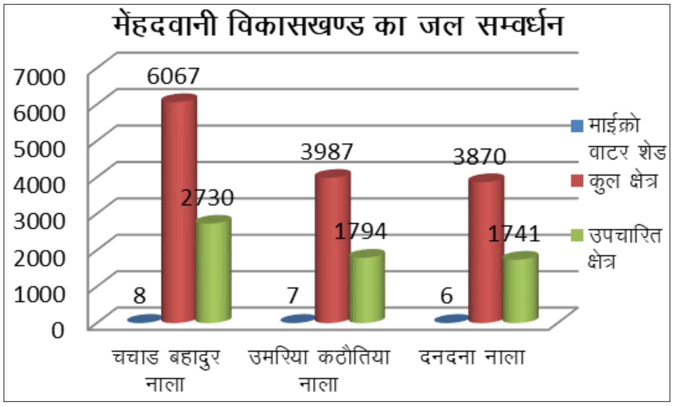

आरेख 2

उपर्युक्त सारणी के अनुसार विकासखण्ड मेंहदवानी में चचाड बहादुर नाला में 08 माईक्रो वाटर शेड स्थापित किये गये हैं इसमें कुल क्षेत्र 6067 है। और उपचारित क्षेत्र 2730 हेक्टर है। उमरिया कठौतिया नाला में 07 माईक्रो वाटर शेड स्थापित किये गये हैं इसमें कुल क्षेत्र 3987 है। और उपचारित क्षेत्र 1794 हेक्टर है। एवं दनदना नाला में 06 माईक्रो वाटर शेड स्थापित किये गये हैं इसमें कुल क्षेत्र 3870 है। और उपचारित क्षेत्र 1741 हेक्टर है। कुल मेंहदवानी विकासखण्ड में 21 माईक्रो वाटर शेड स्थापित किये गये हैं इसमें कुल क्षेत्र 13924 हेक्टर है। और उपचारित क्षेत्र 6265 हेक्टर है।

इस तरह मेंहदवानी विकासखण्ड में 21 माईक्रो वाटर शेड का कार्य पूर्ण हो चुका है जो जल प्रबंधन एवं जल सम्वर्धन का कार्य है।

यहाँ पर दूसरा एवं तीसरा उपकल्पना सिद्ध होता है कि मेंहदवानी विकासखण्ड में भूमिगत जल को बढ़ाने के लिये योजनाएँ संचालित हैं और जल प्रबन्धन एवं जल सम्वर्धन का कार्य किया जा रहा है जिसको सारणी क्रं. 2 में एवं चित्र द्वारा दिखाया गया है

भूमिगत जल संसाधन

वर्षा का जो जल धरातल पर पड़ता है उसका कुछ तो वाष्पीकृत हो जाता है किन्तु काफी भाग धरातल द्वारा सोख लिया जाता है। अनुमान किया गया है कि वर्षा जल का एक तिहाई भाग तो प्रवाही जल के रूप ममें नदी–नालों में बह जाता है भूमि द्वारा सोखा गया कुछ जल पौधों की जड़ों को प्राप्त होता है। किन्तु इसका अधिकांश भाग नीचे की परतों में चला जाता है, वहाँ यह भूमिगत जल में मिल जाता है जो पीने तथा अन्य घरेलू कार्यों, औद्योगिक कार्यों तथा सिंचाई के काम आता है, धरातल के नीचे जल–भरो में संचित रहता है। जब इस जल भरे में कोई छिद्र किया जाता है या कुआ खोदा जाता है तो इससे शुद्ध जल प्राप्त होता है जो पीने तथा अन्य कामों में प्रयुक्त होता है। भूमिगत जल का संचयन बालुका पत्थर, सेलखड़ी, बजरी जैसी प्रवेश्य शैलों में होता है।

भूमिगत जल जिन स्तरों में प्राप्त होता है, वे विभिन्न गहराई पर मिलते हैं। कभी यह धरातल के निकट सहज प्राप्त होती है। और कभी इसे प्राप्त करने के लिए शैलों में गहराई तक वेधन करना पड़ता है। कभी – कभी वेधन के बाद भूमिगत जल धरातल पर वेग से आता है। ऐसे कूपों को उत्स्रुत कूप के रूप में होता है। ऐसे गहराई पर स्थित जल को पम्प द्वारा बाहर निकालना पड़ता है। इस प्रकार के कुएँ से जल प्राप्त करने के लिए वेधन करना पड़ता है। यह जल घरेलू सिंचाई तथा औद्योगिक कार्यों में प्रयुक्त होता है।

भूमिगत जल की प्रर्याप्त आपूर्ति बनाये रखने की समस्या बहुत विकट हो गई है। शुष्क क्षेत्रों में नहीं, अपितु आर्द क्षेत्रों में भी यह कठिन समस्या बन गई है। अत्यधिक पम्प सिंचाई के कारण अनेक क्षेत्रों के भूमिगत जल संसाधनों का ह्रास हो गया है। गंगा घाटी में ही अनेक खण्डों में जल स्तर इतना नीचे गिर गया है कि प्रचुर भूमिगत जल संसाधनों वाले खण्ड अब ग्रे हो गये हैं। अतएव भूमिगत जल संसाधनों के उचित प्रबंधन की बहुत आवश्यकता है। इन सब समस्याओं को देखते हुए शोधार्थी ने ''जल प्रबन्धन में जल संवर्धन कार्यक्रम की भूमिका'' के बारे में शोध करने का प्रयास कर रहा है। एवं डिण्डौरी जिला बहुत ही ऊबड़–खाबड़ एवं पहाड़ी क्षेत्र होने से वर्षा का जल नदियों के सहारे समुद्र में बह कर चला जाता है इस कारण से इस जिला में सात विकासखण्ड हैं जिनमें दो ही विकासखण्ड है जहाँ पर जल प्रबंध एवं जल सम्वर्धन के कार्यक्रम एवं योजनायें संचालित हैं। इन दो विकासखण्डों के नाम 1. मेंहदवानी एवं 2. समनापुर है। जिसमें शोधार्थी डिण्डौरी जिला के मेंहदवानी विकासखण्ड को चुना है जिनके कुछ चित्र शोधार्थी द्वारा दिखाने का प्रयास किया गया है।

सारणी 3: मेंहदवानी विकासखण्ड में जल स्त्रोत

मेंहदवानी विकासखण्ड	नदियाँ	जलाश्य	तालाब	कुएँ	अन्य
हाँ	47	12	28	32	28
नहीं	13	38	16	07	12
निरूत्तर	00	10	16	21	20
कुल योग	60	60	60	60	60

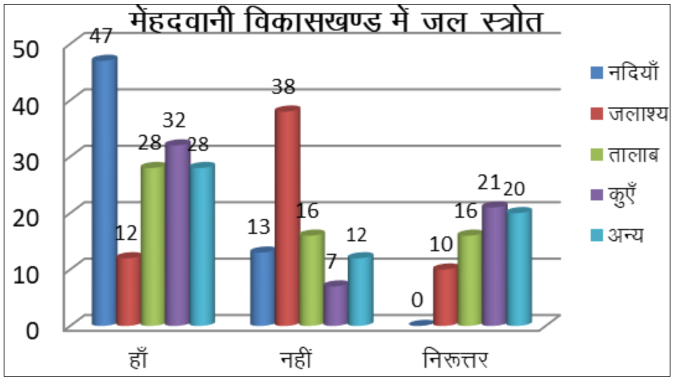

आरेख 3

उपर्युक्त सारणी के अनुसार विकासखण्ड मेंहदवानी के 60 गाँवों के उत्तरदाताओं के अनुसार मेंहदवानी के गाँव अधिकतर नदियों के किनारे बसे हुए हैं जिसमें 47 उत्तरदाताओं ने हाँ कहा है एवं 13 उत्तरदाताओं ने नहीं कहा है। जलाश्यों के किनारे 12, तालाब के किनारे बसे हैं। और कुएँ 32 एवं अन्य जल स्त्रोत 28 हैं। जिससे पता लगता है। की जल के स्त्रोत मेंहदवानी विकासखण्ड में है। जिसे जल संम्वर्धन एवं जल प्रबन्ध की आवश्यकता है। और सरकार की योजनाऐं संचालित हो रहे हैं। जिससे मेंहदवानी विकासखण्ड में जल की प्रतिपूर्ति होने की सम्भावनाएँ देखा जा सकता है आने वाले समय में।

समस्याएं

- जल से संबंधी योजना का अभाव।
- योजनाओं के क्रियांवयन की कमी।
- जानकारी तथा जागरूकता की कमी।
- पहाड़ी क्षेत्र में लागत की कमी।

सुझाव

- मेंहदवानी विकासखण्ड क्षेत्र में वर्षा जल को रोकने के उपाये कराना चाहिये। जो भी सरकारी योजनायें आते हैं जिला से उन योजनाओं को संचालित करना चाहिये।
- मेंहदवानी क्षेत्र में जितने भी नदी नाले हैं उनमें एनीकट बाँध बनाना चाहिये, जिससे वर्षा का जल बहने से रोका जा सके। पहाड़ी क्षेत्रों में सीढ़ीनुमा खेती करना चाहिये।
- जल से संबंधी योजनाओं को लोगों तक पहुँचाने का प्रयास।
- सरकार द्वारा योजनाओं का सुचारू रूप से क्रियांवयन।

निष्कर्ष

डिण्डौरी जिले के मेंहदवानी विकासखण्ड का क्षेत्र अति दुर्गम एवं ऊबड़ खाबड़ क्षेत्र में जनजाति परिवार अपनी आजीविका के लिए सिर्फ खरीफ के फसल ही उगाते थे वर्षा ऋतु में खेती करते थे तथा वर्ष के अन्य महीनों में काम की तलाश में बहार पलायन कर जाते थे, जिससे उनकी सामाजिक – आर्थिक स्थिति कमजोर बनी रहती थी।

शासन द्वारा विचार किया गया कि वर्षा जल का समुचित सग्रहण

वर्षा ऋतु में कर लिया जाये तो रवी के मौसम में कुछ ही फसलें ली जाती है जिससे जनजाति परिवारों के शहरों के तरफ जाते हैं रोजगार के लिए खेती को स्थायित्व देकर अपनी सामाजिक – आर्थिक स्थिति को मजबूत करेगें।

जिले में जल संसाधन एवं जल संग्रहण कार्यक्रमों के माध्यम से कितनी सफलताएँ मिली है? इस अध्ययन से यह जानने की कोशिश की गई है। इसके लिये डिण्डौरी जिले के मेंहदवानी विकासखण्ड के 82 गाँव में 12 गाँवों का अध्ययन किया गया है जिससे पता चला है कि कुछ क्षेत्र में ये योजनाऐं संचालित हैं जिससे वहाँ के लोगों को राहत मिला है।

जल संकट से सिंचित भूमि हेतु जल स्त्रोत

जिन गाँवों में जलग्रहण योजना लागू है उन गाँवों में जल स्त्रोत के रूप में 439 नल, 610 कुएँ, 79 तालाब एवं 03 जलाश्य जिसमें जलाश्यों की संख्या बहुत ही कम देखने को मिलता है।

सिंचाई के साधनों में सिंचाई स्त्रोतों से खेतों तक पानी पहुँचाने के लिए विभिन्न सिंचाई कि साधन जैसे डीजल पम्प, मोटर पम्प, नहर एवं नलों में नलकूप के द्वारा पानी पहुँचाया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गुर्जर राम कुमार, ''जल संसाधन भूगोल'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर नई दिल्ली
2. जाट बी.सी. ''जल संसाधन भूगोल'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर नई दिल्ली
3. ''भारत सरकार'' केन्द्रीय जल आयोग गेज निस्सारण एवं वेतार केन्द्र जिला डिण्डौरी (म.प्र.)
4. कार्यालय कार्यपालन यंत्री लोक स्वास्थ्य यॉंत्रिकीय विभाग खण्ड–डिण्डौरी जिला डिण्डौरी मध्य प्रदेश शासन।
5. गौतम डॉ. नीरज कुमार, ''जल प्रबंधन वर्तमान सदी की आवश्यकता''
6. जैन डॉ. बी.एम., ''रिसर्च मैथ्डोलॉजी'' साउथ एशियन स्टेगीज सेन्टर, राजस्थान वि.वि. जयपुर, रिसर्च पब्लिकेशन जयपुर।
7. कुमार डॉ. प्रमीला, शर्मा डॉ श्री कमल ''म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
8. माजिद हुसैन एवं सिंह रमेश ''भारत का भूगोल'' जामिया मिलिया इस्लामिया, (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) नई दिल्ली।
9. जिला पंचायत एवं जनपद पंचायत डिण्डौरी (म.प्र.)
10. मरकाम प्रसन्न वदन (2011–2012) ''जल संसाधन एवं सिचाई विकास परियोजनाओं का एक भौगोलिक अध्ययन'' (जिला डिण्डौरी के संदर्भ में) अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध, एम. फिल. हेतु निर्देशक डॉ. लोकेश श्रीवास्तव, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर।